मधुबन ओम् शान्ति अंक 376 नवम्बर 2023

पत्र-पुष्प

"सुख स्वरूप बन सबको सुख दो, सुख लो, दुआयें दो और दुआयें लो"

(दादी जी का याद-पत्र : 20-10-2023)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा दुआओं के विमान से उड़ने और उड़ाने वाले, सर्व को गुण और शक्तियों का सहयोग देने वाले, पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम की प्रालब्ध का अनुभव करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण बाबा के नूरे रत्न,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ, दीपावली के पावन पर्व की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां,

बाद समाचार - आप सभी सदा ही उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते, बापदादा के साथ, सर्व सेवा साथियों की, ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते सदा उन्नति का अनुभव कर रहे होंगे! बाबा कहते बच्चे, वर्तमान समय और कोई पुरुषार्थ करो या न करो सिर्फ दुआयें दो और दुआयें लो। अभी दुआओं का खाता जमा होना चाहिए। जब अभी दुआओं के खाते से सम्पन्न बनेंगे तब भक्ति मार्ग में आपके चित्रों से सभी को दुआयें मिलती रहेंगी। जिन्हें सर्व की दुआयें मिलती हैं उनका पुरुषार्थ बहुत ही सहज हो जाता है, इसके लिए सभी को सुख देते चलो। सुख देने से दुआयें बहुत मिलती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो और सुख लो, दुआयें दो और दुआयें लो, इसमें कोई मेहनत नहीं है, इससे बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे। लेकिन ध्यान रखना - कभी मर्यादा तोड़ करके किसको सुख नहीं देना। मर्यादापूर्वक दिल से सबको सुख दो।

बोलो, मीठे मीठे भाई बहिनें, ऐसा ही अटेन्शन रख दुआओं के रॉकेट से उड़ते रहते हो ना! समय भी यही इशारा कर रहा है बच्चे, अब बुद्धि के विस्तार को सार में समेटकर एक सेकण्ड में संकल्पों को फुलस्टाप लगाने का अभ्यास करो। अभी कोई भी प्रश्नों की हलचल में उलझना नहीं है। क्यों, क्या के प्रश्नों में संगम के अमूल्य समय को गंवाना नहीं है। साक्षी दृष्टा स्थिति में रह स्वयं के और सर्व के पार्ट को देखते हुए सदा प्रसन्नचित रहना है। आपकी यह प्रसन्नचित स्थिति ही वायुमण्डल को परिवर्तन करेगी। अभी रूहानी वायुमण्डल बनाने में सहयोगी बनो, आपके सेवास्थानों का ऐसा वायुमण्डल हो जो आने वाली हर आत्मा को शान्ति व शक्ति की अनुभूति हो। सबको सहारा मिले।

बाकी वर्तमान समय मधुबन में तो देश विदेश के अनेकानेक बच्चे अव्यक्त मिलन की गहन अनुभूतियां करने के लिए भाग-भाग कर आ रहे हैं। अव्यक्त वतन वासी बाबा अपने बच्चों को अनेक वरदानों से भरपूर कर देते हैं। बाबा के घर की शक्तिशाली ऊर्जा, यहाँ के पवित्र प्रकम्पन्न आने वाली हर आत्मा को व्यर्थ से मुक्त कर देते हैं। मीठे प्यारे बापदादा और हमारी अव्यक्त स्वरूपा दादियों की शक्तिशाली पवित्र किरणें छत्रछाया का अनुभव कराती हैं।

अभी तो दीपावली का पावन पर्व सभी खूब धूमधाम से मनायेंगे। मीठे बाबा ने हम सबकी ज्योति जगाकर अंधकार से रोशनी में लाया है। अभी एक से एक दीप जलाते, सबको परमात्म सन्देश देते हुए सच्ची दीपावली अर्थात् आने वाली नई सतयुगी दुनिया में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण का कारोनेशन दिन धूमधाम से मनाना है। तो सभी को ऐसी स्वर्णिम दुनिया के आगमन की बहुत-बहुत बधाईयां।

अच्छा - आप सभी खुश मौज में होंगे। सभी को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

दुआयें दो और दुआयें लो

1) दुआयें लेने के लिए जो असमर्थ हैं, उन्हें समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग दो। यह दुआयें लिफ्ट से भी तेज राकेट हैं, फिर आपको पुरुषार्थ में समय देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रॉकेट से उड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगायेंगे तो आपका पुरुषार्थ स्वत: जमा होता जायेगा।

2) सेवा में किसी विशेष कार्य के निमित्त बनकर जो कार्य करते हैं उन्हें उसकी विशेष दुआयें मिलती हैं। निमित्त बनने का भाग्य मिलता है। निमित्त बनने वाले पर सभी की नज़र होने के कारण उसका स्व पर भी अटेन्शन रहता है। उनका पुरुषार्थ अपने प्रति भी सहज हो जाता है। अगर निमित्त बनी हुई आत्मा यथार्थ पार्ट बजाती है तो औरों के सहयोग की मदद मिलती है।

3) सबके दिल की दुआयें बहुत अमूल्य चीज़ हैं, दिल से जिसको जितनी दुआयें मिलती हैं, वह दिल की दुआयें जमा होती हैं तो सहज पुरुषार्थ हो जाता है। सिर्फ सेवा में जी हाज़िर, हाँ हाजिर करके पुण्य का खाता सदा बढ़ाते रहो।

4) दिल-दिमाग सदा आराम में हो, सुख-चैन की स्थिति में हो, ऐसी सन्तुष्टमणि बनो। यह सन्तुष्टता ही बाप की और सर्व की दुआयें दिलाती है। सन्तुष्ट आत्मा सदा अपने को बाप और सर्व की दुआओं के विमान में उड़ता हुआ अनुभव करेगा। दुआ मांगेगा नहीं, लेकिन दुआयें उसके आगे स्वत: ही आयेगी।

5) कोई आत्मा है ही कमजोर, तो उसकी कमजोरी को देखने के बजाए उसे सहयोग दो तो दुआयें मिलेंगी। अगर और कुछ भी नहीं कर सकते हो तो सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें दो, दुआयें लो। सम्मान दो और महिमा योग्य बनो। सम्मान देने वाला ही सर्व द्वारा माननीय बनता है और जितना अभी माननीय बनेंगे, उतना राज्य अधिकारी और पूज्य आत्मा बनेंगे।

6) वर्तमान समय प्रमाण क्षमा करना ही शिक्षा देना है। जैसे शिक्षक बनना बहुत सहज है। ऐसे क्षमा करो, रहमदिल बनो, सिर्फ शिक्षक नहीं बनो। जब अभी से क्षमा करने के संस्कार धारण करेंगे तब ही दुआएं दे और ले सकेंगे।

7) कोई अकल्याण की वृत्ति वाला है उसे आप अपने कल्याण की वृत्ति से परिवर्तन करो या क्षमा करो। परिवर्तन नहीं भी कर सकते हो, क्षमा तो कर सकते हो। मास्टर क्षमा के सागर हो, तो आपकी क्षमा उस आत्मा के लिए शिक्षा हो जायेगी। आजकल शिक्षा देने से कोई समझता, कोई नहीं समझता। क्षमा कर दो तो यह क्षमा ही शिक्षा हो जायेगी। क्षमा करना अर्थात् शुभ भावना की दुआयें देना, सहयोग देना।

8) कोई कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो, अज्ञानी पतित आत्मा हो, ब्राह्मण परिवार की पुरूषार्थहीन आत्मा हो, पहले उसे क्षमा करो। जैसे बेहद का बाप बच्चों की बुराई वा कमजोरी को दिल में न समाए क्षमा करते हैं, पूज्य देवता भक्तों पर क्षमा करते हैं। ऐसे आप भी विश्व कल्याणकारी मास्टर रचता, बाप के समान पूज्य आत्मा हो, आप भी किसी की बुराई वा कमजोरी दिल पर न रख पहले क्षमा करो। उसके बाद ऐसी आत्मा के कल्याण प्रति उसके वास्तविक स्वरूप और गुण को सामने रखते हुए महिमा करो अर्थात् उस आत्मा को अपनी महानता की स्मृति दिलाओ तब उसके दिल से आपके प्रति दुआयें निकलेंगी।

9) जैसे कोई शरीर से कमजोर होता है तो उसे दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते हैं, तो आप सबमें भी जो शक्तियां हैं, उस शक्ति का, गुणों का सहयोग कमजोर शक्तिहीन आत्माओं को दो। असमर्थ आत्मा को समर्थी दो। जब आप अपने गुण और शक्ति का सहयोग देंगे तब वे आपको दिल से दुआयें देंगे।

10) अगर कोई कमजोर है, वशीभूत है तो उसके प्रति पहले भाषा और संकल्प बदली करो। यह संकल्प में भी न आये कि यह तो बदलने वाला ही नहीं है अथवा पहले यह बदले, नहीं। मैं पहले बदलूं। जैसे और बातों में मैं आता है, ऐसे कोई क्या भी करता है, मुझे क्या करना है, मुझे क्या सोचना व कहना है, इसमें मैं-पन लाओ, इससे ही श्रेष्ठ वायब्रेशन फैलेगा और आपको सबकी दुआयें मिल जायेंगी।

11) बापदादा की, सर्व सेवा साथियों की और सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते चलो। यह दुआओं का खाता अभी बहुत जमा चाहिए। अभी दुआओं का खाता इतना सम्पन्न करो जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहें।

12) जिसको दिल से जितनी दुआयें मिलती हैं, वह दिल की दुआयें जमा होती हैं तो पुरुषार्थ सहज हो जाता है, इसके लिए सेवा का

पुण्य सदा बढ़ाते रहना। सभी को सुख देते रहना। सुख देने की दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ में वह दुआयें एड हो जाती हैं।

13) जिसकी सेवा निर्विघ्न है, निर्विघ्न सेवा से ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती जाती हैं। जो किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से किसी को सुख देता है उसकी मार्क्स जमा होती हैं इसलिए सुख स्वरूप बनकर सुख दो और सुख लो। दुआयें लो, दुआयें दो, इसमें कोई मेहनत नहीं है, इससे बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे।

14) सुख देने में सिर्फ ध्यान रखना - कभी मर्यादा तोड़ करके किसको सुख नहीं देना। वह सुख के खाते में जमा नहीं होता है, वह ऑटोमेटिक मशीनरी दु:ख के खाते में जमा हो जाती है इसलिए दिल से मर्यादापूर्वक सुख दो। दिखावा-मात्र नहीं, दिल से। सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा सुख दो तो दुआयें जमा हों।

15) आप श्रेष्ठ आत्माओं के हर संकल्प में सर्व के कल्याण की, श्रेष्ठ परिवर्तन की, 'वशीभूत' से स्वतन्त्र बनाने की दिल की दुआयें वा खुशी की मुबारक सदा नैचुरल रूप में दिखाई दे क्योंकि आप सभी दाता अर्थात् देवता हो, देने वाले हो।

16) ब्राह्मण आत्मायें सुख के सागर के बच्चे, सुख स्वरूप सुखदेवा हैं। जब दु:खधाम को छोड़ चले तो न दु:ख लेना है, न दु:ख देना है। सुख देने से दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ में यह दुआयें एड हो जाती हैं। किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से – जब कोई सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो और सुख लो।

17) सदा हर सेकेण्ड उमंग-उत्साह बढ़ता रहे तो एक दिन इस विश्व को उत्साह भरा अपना राज्य बना लेंगे इसलिए सदा हर एक में उत्साह भरना और दुआयें लेना। हर सेकेण्ड दुआयें लेते जाओ और दुआयें देते जाओ। आपकी दुआओं से सदा सर्व आत्मायें सुखी हो जायेंगी।

18) समस्याओं के वशीभूत कमजोर आत्मा को शक्ति और गुणों का सहयोग दो, असमर्थ को समर्थी दो तो उनकी दुआयें आपके लिए लिफ्ट बन जायेंगी। अब पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम की प्रालब्ध का अनुभव करो, दुआयें लेना सीखो और सिखाओ। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना–यह है दुआयें लेना और दुआयें देना। यह दुआयें सहज ही मायाजीत बना देंगी।

19) कोई कैसा भी हो, ग्लानि करने वाला भी हो तो भी आपके दिल से उस आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें – इसका भी कल्याण हो, इसकी भी बुद्धि शान्त हो, आपके शुभ भावना वाले श्रेष्ठ संकल्प उसे परिवर्तन कर देंगे।

20) सहन करने के पीछे शक्ति है। सहन करना अर्थात् शक्ति रूप को प्रत्यक्ष रूप में दिखाना। सहन किया तो किसके प्रति सहन किया? बाप के आज्ञाकारी बनने के लिये सहन किया, दूसरे के लिये नहीं सहन किया, बाप की आज्ञा मानी। तो आज्ञा मानने की दुआयें जरूर मिलेंगी।

21) कई बच्चे बातों को सामने देखते हैं और सोचते हैं कि हमने तो बहुत सहन किया, कब तक सहन करेंगे, सहन करने की भी कोई हद होनी चाहिए। लेकिन जितना बेहद सहन, उतनी बेहद की दुआयें क्योंकि बाप के आज्ञाकारी बन रहे हैं। बाप ने कहा है सहन करो इसलिए मजबूरी से सहन नहीं करो, खुशी से सहन करो, इसमें ही फायदा है।

22) अमृतवेले से लेकर रात तक यही लक्ष्य रखो कि दुआयें देनी हैं, दुआयें लेनी हैं। और कुछ भी नहीं करो लेकिन दुआएं दो और दुआएं लो। कोई आपको दु:ख भी दे तो भी आपको दुआयें देनी हैं, इससे सहनशीलता का गुण स्वत: आ जायेगा।

23) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वत: शुभ-भावना और शुभ-कामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं के प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: होती रहे।

24) बापदादा की आज्ञा मिली हुई है - बच्चे न व्यर्थ सोचो, न देखो, न व्यर्थ सुनो, न व्यर्थ बोलो, न व्यर्थ कर्म में समय गंवाओ। आप बुराई से तो पार हो गये। अब ऐसे आज्ञाकारी चरित्र का चित्र बनाओ तो परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जायेंगे।

25) बाप की आज्ञा है बच्चे अमृतवेले विधिपूर्वक शक्तिशाली याद में रहो, हर कर्म कर्मयोगी बनकर, निमित्त भाव से, निर्माण बनकर करो। ऐसे दृष्टि-वृत्ति सबके लिए आज्ञा मिली हुई है। यदि उन आज्ञाओं का विधिपूर्वक पालन करते चलो तो सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शान्त स्थिति अनुभव करते रहेंगे।

26) बाप की आज्ञा है बच्चे तन-मन-धन और जन –इन सबको बाप की अमानत समझो। जो भी संकल्प करते हो वह पॉजिटिव हो, पॉजिटिव सोचो, शुभ भावना के संकल्प करो। बॉडीकान्सेस के ''मैं और मेरेपन से'' दूर रहो, यही दो माया के दरवाजे हैं। संकल्प, समय और श्वांस ब्राह्मण जीवन के अमूल्य खजाने हैं, इन्हें व्यर्थ नहीं गंवाओ। जमा करो। ऐसे आज्ञाकारी बच्चे को मात-पिता की दुआयें मिलती हैं।

27) बापदादा की मुख्य पहली आज्ञा है - पवित्र बनो, कामजीत बनो। इस आज्ञा को पालन करने में मैजारिटी पास हो जाते हैं। लेकिन उनका दूसरा भाई क्रोध - उसमें कभी-कभी आधा फेल हो

जाते हैं। कई कहते हैं - क्रोध नहीं किया लेकिन थोड़ा रोब तो दिखाना ही पड़ता है, तो यह भी अवज्ञा हुई, अवज्ञा करने वाले बच्चे को दुआयें मिल नहीं सकती।

28) जो बच्चे अमृतवेले से रात तक सारे दिन की दिनचर्या के हर कर्म में आज्ञा प्रमाण चलते हैं वे कभी मेहनत का अनुभव नहीं करते। उन्हें आज्ञाकारी बनने का विशेष फल बाप के आशीर्वाद की अनुभूति होती है, उनका हर कर्म फलदाई हो जाता है।

29) जो आज्ञाकारी बच्चे हैं वे सदा सन्तुष्टता का अनुभव करते हैं। उन्हें तीनों ही प्रकार की सन्तुष्टता स्वत: और सदा अनुभव होती है। 1- वे स्वयं भी सन्तुष्ट रहते। 2- विधि पूर्वक कर्म करने के कारण सफलता रूपी फल की प्राप्ति से भी सन्तुष्ट रहते। 3- सम्बन्ध-सम्पर्क में भी उनसे सभी सन्तुष्ट रहते हैं। सदा सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट करना यही दुआयें लेने का सहज साधन है।

30) आज्ञाकारी बच्चों का हर कर्म आज्ञा प्रमाण होने के कारण श्रेष्ठ होता है इसलिए कोई भी कर्म बुद्धि वा मन को विचलित नहीं करता, ठीक किया वा नहीं किया, यह संकल्प भी नहीं आ सकता। वे आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते हैं। हर कर्म आज्ञा प्रमाण करने के कारण परमात्म आशीर्वाद की प्राप्ति के फल स्वरूप वे सदा ही आन्तरिक विल पावर का, अतीन्द्रिय सुख का और भरपूरता का अनुभव करते हैं।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

“क्षमा भाव के बिना शिक्षा रोब का रूप ले लेती है इसलिए शुभ भावना सम्पन्न संकल्प करो, स्वमान में रहो और सबको सम्मान दो” (11-11-08)

हम सभी बाबा के लवलीन बच्चे, सदा बाबा के लव में, प्यार में खोये हुए हैं। यह परमात्म प्यार कोटों में कोई को प्राप्त होता है क्योंकि हम डायरेक्ट बाबा की पहली रचना हैं। हमें सदा बाबा याद रहता है, बाबा के बिना तो संसार ही नहीं है। फिर है सूक्ष्म वतन और मूलवतन। उसका भी हम सबने अनुभव किया है, सिर्फ सुना व समझा नहीं है, अनुभवी मूर्त बन गये हैं। बाबा के लव में लीन होने से कितनी मीठी, प्यारी लाइफ का अनुभव होता है। बाबा हम बच्चों को कहते हैं तुम मेरे बच्चे बेफिक्र बादशाह हो क्योंकि हमारी जिम्मेवारी लेने वाला भगवान है। अगर हमने मन से अपने जीवन की जिम्मेवारी बाबा को दे दी, तो भगवान से बड़ा और कोई है क्या! लेकिन यह जरूर देखना है कि सचमुच हमने अपने जीवन की जिम्मेवारी बाबा को दी है! या कभी बाबा को दी है, कभी थोड़ी जो भी सांसारिक बातें होती हैं, उनमें भी बुद्धि जाती है। हमारे सामने माया ही पेपर लेने वाली है। जब बाबा को जिम्मेवारी दे दी, तो उसके आगे माया कुछ नहीं कर सकती। तो बाबा को जिम्मेवारी दी है या कभी-कभी मैं पन आ जाता है? मैं और मेरापन, यह दो बातें ही इस ईश्वरीय जीवन में, सम्पन्न बनने में विघ्न रूप बनती हैं। हद का मैंपन या मेरापन, यह बाबा से दूर कर देता है। जब आप कहते हो बाबा मेरे से कम्बाइन्ड है, तो कम्बाइन्ड अलग हो ही नहीं सकता। जिसके साथ सर्वशक्तिवान कम्बाइन्ड हो उसके आगे माया की हिम्मत ही कैसे होगी!

शुरु में बाबा कहता था बच्ची, इतना मास्टर सर्वशक्तिमान बनो जो माया दूर से ही भाग जाये। दूर से माया को भगाने के लिए कम्बाइन्ड की स्मृति में रहें। कई कहते हैं हम कम्बाइन्ड तो हैं परन्तु समय पर उससे सहयोग नहीं लेते हैं। कोई को भी जब वार करना होता तो पहले वह अकेला करता है फिर वार करता है। हम कम्बाइन्ड से अलग होवें ही क्यों! अगर कम्बाइन्ड रूप में सदा रहें तो माया कुछ नहीं कर सकती। हम युद्ध करें फिर मायाजीत बनें, उसमें भी हम टाइम क्यों खराब करें। अगर किसी को बार-बार बीमारी आती है, तो भले हम दवाई से बीमारी खत्म करें लेकिन बार-बार बीमारी आने से कमजोरी तो आ ही जाती है।

बाबा की आशायें पूर्ण करने वाले कौन! हम बच्चे ही हैं। हम बाबा की आशाओं के दीपक हैं। बाबा की आश हम बच्चों के प्रति क्या है! बाबा कहते हैं मेरे समान बनो। ऐसे नहीं, मेरे समान थोड़ा-थोड़ा तो बनो। नहीं, मेरे समान पूरा बनो। आजकल तो बाबा ने विशेष कहा है कि मैं एक-एक बच्चे को राजा बच्चा बनाता हूँ। स्वराज्य अधिकारी बनाता हूँ। तो हम अपने आप से पूछें हम राजा बच्चे हैं? क्योंकि राजा माना, जिसमें कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर हो। पहले हम पूछें कि हमारा मन के ऊपर कन्ट्रोल है? क्योंकि मन जीते जगतजीत कहा जाता है, जो भी

फीलिंग आती है, तो पहले मन में फील होता है। तो मन के राजा बने हैं? सदा ही मन के राजा बनकर रहें, लिंक जुटा रहे इसके लिए बाबा ने बहुत अच्छी ड्रिल सुनाई है।

बाबा की मुरली में ''सदा'' शब्द यूज़ होता है, कभी-कभी शब्द तो ब्राह्मण जीवन की डिक्सनरी में है ही नहीं। हम भी अपने से पूछें, हम जो भी कर्म करते हैं, जो बाबा कहते हैं सदा लिंक जुटी रहे, ऐसे नहीं टूटे फिर हम जोड़ें। दुबारा जोड़ने से फर्क तो पड़ता है ना। तो मन हमारा ऑर्डर में चलता है? बाबा मन, बुद्धि, संस्कार की कचहरी लगाता था क्योंकि कई बार सूक्ष्म संकल्प इतना चेक करने में तो सूक्ष्म चेकिंग चाहिए कि सारा दिन मन का मालिक बनके मन को चलाया? हम सबका लक्ष्य है कि सम्पूर्ण, बाप समान बनना ही है। तो यह चेकिंग जरूरी है कि मन-बुद्धि-संस्कार सब कन्ट्रोल में हों। हाथ-पांव तो स्थूल कर्म कर्ता निमित्त हैं। लेकिन कभी संस्कार टक्कर में आ जाते हैं, बुद्धि भी कभी हाँ के बजाय ना की तरफ चली जाती है। यह चेकिंग जितनी अपनी कर सकते हैं, दूसरा नहीं कर सकता है।

हम कहेंगे अभी हमने आधा घण्टा योग किया, तो आधा घन्टा योग किया या बीच-बीच में युद्ध किया? आधा घण्टा आप योग में थे या नहीं, यह आप ही जान सकते हो। तो सारा दिन हम यह चेकिंग करें। चेकिंग करेंगे तो चेन्ज होंगे। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बाबा चाहता है कि हम अपने स्वमान में रहें। साथ में हम संगठन में रहते हैं, गाँव-गाँव में हमारा घर है, इतने बड़े परिवार के हम हैं। देखो हम झाड़ के चित्र में बीज के साथ बैठे हैं। तो पूर्वज हो गये ना, पूज्य भी हैं, पूर्वज भी हैं। विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हैं। जहाँन के नूर, बाबा की आँखों के तारे हैं। बाबा समय प्रति समय कितने स्वमान देते हैं। अमृतवेले हम बाबा से शक्ति लेकर अगर सारे दिन का स्वमान और टाइमटेबल सेट करें कि आज सारा दिन इस स्वमान के अनुभव में रहेंगे। अगर रोज़ एक स्वमान भी याद करें और सारा दिन उसी स्वमान में स्थित रहने का अभ्यास करें, तो बहुत मजा आयेगा। संगठन में रहने के लिए दूसरा शब्द है - सबको सम्मान दो। स्वमान में रहो और सम्मान दो।

संगठन में चलना और सफल होना उसके लिए सबको सम्मान दो क्योंकि संगठन में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही। सभी एक नम्बर तो नहीं होंगे। माला में 108 वाँ नम्बर भी तो है ना। बाबा ने सभी की खातिरी तो बराबर की। फिर भी 108 वाँ नम्बर क्यों बना! यह हरेक का पुरुषार्थ अपना-अपना है। कुछ भी हो संगठन में एक दो को सम्मान दो और सम्मान लो।

जैसे रास्ते में कोई गिर गया है तो आप क्या उस गिरे हुए व्यक्ति को लात मारेंगे या सहारा देकर उठायेंगे? मर्यादा तो यही है ना कि उसे सहारा दो, खड़ा करो। तो मानो ब्राह्मण परिवार में कोई संस्कार वश गिर गया है तो हमारा काम क्या है? उसको सहारा देना। सहारा क्या देंगे, शुभ भावना, शुभ कामना। भले वो नहीं देवे, मैं तो दूँ। संगठन में सम्मान देना है। साथ-साथ परिवार में सबके प्रति यही इच्छा रहती है कि यह सुधर जाए। इसको कोई ऐसी शिक्षा दें जो यह अपने को ठीक कर लेवे। लेकिन शिक्षा भी अगर क्षमा भाव के बिना होगी तो शिक्षा रोब का रूप ले लेती है। रोब भी क्रोध का ही अंश है। मम्मा हमेशा कहती थी कि मुझे बाबा ने काम दिया है कि आपको इन अलग-अलग डाल-डालियों को इक्ट्ठा करके एक चन्दन की डाली बनाना है। हम भी मास्टर प्यार के सागर हैं। तो मास्टर ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, हमारा स्वरूप होना चाहिए। तो शिक्षा भले दो लेकिन क्षमा का स्वरूप हो।

यह हमको चेक करना है कि हम स्वमान में रहते हैं? अपने मन का भी टाइम-टेबल बनाओ। किस स्वमान में रहना है, मन्सा से क्या सेवा करना है? कर्मणा क्या करना है, संगठन में स्नेह से कैसे चलना है। एक दो से कैसे गुण उठाना है। यह सारा मन का टाइमटेबल रोज़ सुबह अपना बनाना चाहिए। मन का टाइमटेबल बनाने से आपकी चेकिंग बहुत अच्छी हो जायेगी। मन का मालिक बनने के बिना कभी भी ऊंच पद नहीं पा सकते। जो स्व का मालिक नहीं बन सकता है, वो विश्व का मालिक कैसे बनेगा। पहले स्वराज्य फिर विश्व-राज्य। यह ज्ञान एक दर्पण है, इस दर्पण में अपना मुख आपेही देखो।

अचानक के खेल तो शुरु हो गये हैं ना, अति में जाना बाकी है। संसार के समाचार सुनो तो क्या हो रहा है! जो बाबा ने कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को कैंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे। जो करना है सो अब करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से। अगर बेफिकर बादशाह बनकर रहना है तो कोई हद का संकल्प न हो। बाबा में पूरा फेथ हो। अरे हम अच्छे हैं, अच्छे रहेंगे और अच्छा होगा। इतना निश्चय पक्का होना चाहिए। हमारा साथी कौन है! अति भी हो जाये तो भी साक्षी होकर देखना है। हमारे साथ बाबा है। यह बाबा का निश्चय, हमें निश्चिन्त बनायेगा। ये कर लूँ, यह बचा लूं। यह आना माना संशय बुद्धि और संशय बुद्धि विजयन्ती हो नहीं सकता। हमारा बाबा से प्यार है, हम बाबा के प्यार में खोये हुए हैं। निश्चय बुद्धि कभी भी हार खा नहीं सकते, बाबा के गले का हार बनेंगे। तो निश्चय में रहो, कम्बाइन्ड रहो। कोई भी संकल्प नहीं करो। बाबा हमारे साथ है, हमारा बाल भी बांका नहीं हो सकता। तो सभी निश्चयबुद्धि विजयन्ती है ना! हम ही वियजी बनेंगे, इतना उमंग-उत्साह और खुशी होनी चाहिए। बाबा के निश्चय में सब हुआ ही पड़ा है, इतने निश्चिन्त। अच्छा।

दादी जानकी जी के अमृत वचन

“स्वदर्शन चक्र घुमाने के लिए स्व पर राज्य हो, कभी किसी के चक्कर या टक्कर में नहीं आओ” (30-07-2006)

संगमयुग पर कमाई करते-करते बहुत बड़ी हो जाती है। आज के जमाने में धन की कमाई बड़ी मेहनत से करते हैं। बहुत कमाने वाले सारा दिन सोचते हैं लेकिन अभी बाबा ऐसी कमाई कराते हैं जो सोचना बन्द। सोचेंगे तो नुकसान पड़ जायेगा, नहीं सोचेंगे, विश्वास और सच्चाई से काम करेंगे तो फायदा ही फायदा है। सोचने की बात ही नहीं है। शान्ति और प्रेम में कमाई ऐसी हो रही है, उसमें खुशी भी आ रही है। फिर जी चाहता है जैसे मेरी कमाई हो रही है, वैसे संगठन की भी कमाई हो जाये। इस पढ़ाई में ही कमाई है। उस पढ़ाई में पहले पढ़ते हैं फिर कमाई होती है। उसमें टाइम भी खर्च करते हैं, मनी भी खर्च करते हैं। लेकिन अभी बाबा जो हमको पढ़ाता है इसमें कमाई ही कमाई है। पढ़ाई जितना अच्छी पढ़ते हैं, तो लगता है कि मेरी जीवन बहुत सुखी है। कोई फिकर की बात ही नहीं है। भविष्य के लिए जमा हो रहा है। जिस दिन पढ़ाई ठीक से नहीं पढ़ते हैं तो खुशी नहीं रहती है। इस पढ़ाई से न केवल खुशी, शक्ति आ रही है लेकिन उस शक्ति से हम हंस बन गये हैं। श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा हो रहा है, व्यर्थ खत्म हो गया। जैसा संकल्प, वैसी वाणी, वैसा कर्म।

तो संकल्प को समझना, समझ के संकल्प को पैदा करना, आपेही संकल्प न चलें, निकम्मे संकल्प न चलें। काम लायक संकल्प आयें, जिससे औरों को भी फायदा हो, मेरे को भी फायदा हो क्योंकि औरों को मिला सो मेरे को मिला। पढ़ाई में कमाई दोनों काम हो रहे हैं। जो खुद के मनन चिन्तन में है, उसके मुख में ज्ञान का सार स्पष्ट रूप में आ जायेगा। वह सार है मनमनाभव। फिर मन बिचारा बाबा की बात सुनता है। भगवान कहता है मनमनाभव। कितना मेरा मन अच्छा हो गया!

बुद्धि को भगवान कहता है, मध्याजीभव। मनमनाभव में कर्मेन्द्रियां शान्त हो गयी फिर मध्याजीभव में चार बाहें आ गयी। स्वदर्शन चक्र, ज्ञानयोग की प्राकाष्ठा आ गयी, विष्णु को कमल के फूल पर खड़ा हुआ दिखाते हैं। योगी कमल पुष्प पर बैठा हुआ दिखाते हैं। कमल आसन पर न्यारा होकर बैठा है। कईयों को समझ में ही नहीं आता है, बुद्धि से समझा है, पर अनुभव नहीं होता है, डिटैच और न्यारा कैसे हो। अटैचमेन्ट का अनुभव बहुत है, कितना समय लगा है बाबा का बनने में। कितना दु:ख दिया है फिर भी छोड़ते नहीं हैं। फ्री होते हैं तो डर लगता है, अकेलापन लगता है। आदत है किसी को पकड़कर चलने की, नहीं तो बेसहारा है। जवानों को भी होता है तो बूढ़ों को भी होता है, क्योंकि शरीर से अटैचमेन्ट बहुत है। बाबा न्यारापन सिखाता है। न्यारा रहने से योग अच्छा लगता है। तो कमलपुष्प समान प्योरिटी, जरा छींटें भी नहीं, इतना न्यारा है तो आसन पर बैठा है। यह प्रैक्टिस नहीं करते हैं तो माया छोड़ती नहीं है। माया पीछा उसका करती है, देखती है यह भगवान का तो बने हैं पर मेरे बिगर बिचारे रह नहीं सकते हैं। मेरे पास घर है, धन है, पदार्थ है, माया दिखाती है सब। बाबा कहता है मैं दिखाता नहीं हूँ, मेरे पास जो है, इन आँखों से देख नहीं सकते हो और बॉडी कान्सेस से समझ नहीं सकते हो। मेरे पास है तेरे को देने के लिए, उसके लिए सोल कान्सेस रहो तो सोल को पता चले। जब तक थोड़ा बॉडी कान्सेस है तो बुद्धि ऊपर नहीं जाती है, इधर-उधर जाती है। जब सोल कान्सेस है तो ऊपर जाती है। बाबा ऊपर से इतना देता है, जो उसकी भेंट में सब किचड़ा है। बाबा स्वच्छ बना देता है। अन्दर से इतनी स्वच्छता, मैं शुद्ध आत्मा हूँ फिर शान्त, मैं बाप की हूँ तो प्यार पैदा हो जाता है। किसी ने कहा मुझे प्यार का अनुभव नहीं होता है। अरे तुम प्यार करके देख। वो प्यार कर रहा है, यहाँ-वहाँ से निकालके प्यार करने के लिए आया है। परन्तु झूठा प्यार भी चाहिए, जिस प्यार में दु:ख समाया है वो भी नहीं छोड़ना है। और सच्चा प्यार करने वाला बाबा जो सदा सुख देता है, वो भूल जाता है!

ज्ञान माना अन्दर डीप जाना, मैं क्या सोचती हूँ, क्या बोलती हूँ। अपनी करनी को देख, वाणी को देख, विचार को देख। बाबा का आत्माओं से प्यार है। हर आत्मा से प्यार है। कोई भी आत्मा हाँ-हाँ करती है तो पकड़ लेता है। अचानक भी कोई अच्छा अनुभव कराके पकड़ लेता है। फिर वो जो पुराने अनुभव हैं उनको छोड़। कम से कम चार बातें बुद्धि में रखो। बिचारी बुद्धि को भटकने से छुड़ाओ। मन भी उसके साथ है। संस्कार हैं तो आत्मा में ही। मन भटकता क्यों है! बुद्धि ठीक काम क्यों नहीं करती है! संस्कार पुराने खत्म क्यों नहीं होते हैं? फिर ज्ञान

का सिमरण भी नहीं कर सकते हैं। बाबा ने कहा है हे आत्मा तुम मन को शान्त करके बुद्धि से योग लगा, प्रैक्टिकली बुद्धि लगाई तो संस्कार चेन्ज हो जाते हैं। संस्कारों में पुराने विकारी कर्म सम्बन्ध भर गये थे, जो अभी समझ में आया है, वह चेन्ज हो रहा है।

बुद्धि ठीक काम करती है तो दिमाग ठण्डा रहता है। जब मन शान्त होता है, दिल में बड़ी खुशी आती है। पहले मेरा दिल दिमाग कैसा था, अभी कैसा है। चेन्ज आता है सुनते-सुनते। अन्दर इन्सान को फीलिंग आती है कर्म के अनुसार। अभी अगर मैं चेन्ज होती हूँ तो फील होता है। अभी तक अलबेलाई है, फील होता है। यह अन्तिम जन्म है, अन्तिम घड़ियाँ हैं, आदि में बाबा के थे, होंगे यह सब स्मृति में है। जिसका स्व पर ही राज्य नहीं है वो स्वदर्शन चक्रधारी नहीं हो सकता। या तो चक्कर में है या किसके साथ टक्कर में है वो स्वदर्शन चक्र क्या घुमायेगा। अपने को चेक करना है किसके चक्कर या टक्कर में तो नही हूँ? परन्तु यह चेक करने की फुर्सत ही नहीं है, बाकी सब काम हो रहा है। चक्कर में हैं तो बाबा की याद है ही नहीं, फिर बहाना कुछ भी हो। स्वयं की स्मृति नहीं है। अन्दर की आँख खोलकर बाबा को देख, खुद को न देख, पर बाबा को तो देख। बाबा देख रहा है पर बाबा दिखाई नहीं देता है। चक्कर और टक्कर में कान खुले हैं पर सुनाई नहीं देता है। फिर भी बाबा छोड़ता नहीं है। कहता है आदती हो, मेरे से बिछुड़े हो, अब बाबा मिला, सतगुरु मिला तो भटकना छूट गया। जो करना है, अब कर ले। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

‘‘अपने आपको लकी समझो तो सब विघ्न सहज विनाश कर सकेंगे’’

1) अपने को सदैव वेरी-वेरी लकी समझो। वेरी लकी समझने से विघ्न सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं - चल सकूंगा या नहीं, जाता हूँ ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूं। यह संकल्प भी संशय की निशानी है। मैं वेरी लकी हूँ, लकी उसको माना जाता जिसे अनेक दुनिया की ठोकरें आवें। पत्थर भी पूज्यनीय तभी बनता जब पानी की अनेक चोटें खाता। इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। मैं हमेशा समझती कि पेपर आना माना मुझे लकी बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनाना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा! हजार पेपर आयें तो भी मैं 100 प्रतिशत पास रहूँ। हरेक अपना-अपना पेपर ले। पढ़ाई ही मेरा पेपर है। सारा ब्राह्मण कुल मेरा मास्टर है। कोई भी मेरे सामने आता तो बुद्धि में यही रहता कि यह मेरे से कितनी रूहानियत भरकर जायेगा। जितना उसको आत्मिक शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा, उतना ही मुझे मार्क्स मिलेंगी। हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूँगी उतना मेरा महत्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं मैं इसे इतना स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी काँटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती – हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

2) कभी भी अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं उठाओ। झगड़े का कारण है एक दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह जिन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूँ!

3) ब्राह्मणों में सबसे बड़े से बड़ा नुकसान-कारक अवगुण है – ‘‘जिद्द का स्वभाव’’, जिसमें जिद्द है, उस पर मुझे बड़ा रहम आता। वह बड़ा धोखा खाते, सबसे ज्यादा नुकसान इस जिद्द से होता है। जिद्द मनुष्य को रसातल पहुँचा देता इसलिए कभी किसी बात का जिद्द नहीं करना। कोई रांग है तो राइटियस बुद्धि से निर्णय करना है। जिद्द के स्वभाव से अपने को धोखा न दो। निर्णय करो। एक दो को सहयोग दो, राय दो, अगर कोई जिद्द पकड़ता है तो आप हल्के हो जाओ। लाइट हो जाओ। स्वयं

को लाइट और माइट की मस्ती में रखो तो कभी जोश नहीं आयेगा।

4) नव निर्माण के कार्य के लिए नम्र बनो। पुरुषार्थ से डरो नहीं। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है। इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह-रूहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर जरूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्माण बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व-चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

5) हमें कुमार कुमारियों का बहुत फ़िकरात रहता। हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउन्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं, तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखे हैं इसलिए हम कन्ट्रोल करते – कुमार कुमारियाँ मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता। सेन्टर पर कुमारियाँ अकेली रहती, आप उनसे बैठकर बातें करो – यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं कहती इस बात में समझो हम संन्यासी हैं। कुमार, कुमारी माना संन्यासी। संन्यासी माना हंसना, बोलना, वृत्ति-दृष्टि सबका संन्यास। जितना यह पाठ पक्का रखेंगे उतना अच्छा। अगर हल्के रहेंगे तो टीका होगी। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे, यह मेरे से सुना नहीं जाता। शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आंच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा – क्योंकि हल्के होकर चले।

6) ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का आर्डर है। बाकी कोई आर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा – उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह अभी आंसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनियाँ से हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग। जिसने नींद का त्याग किया, उसने सब त्यागा। 3.30 बजे मीठी नींद आती। बाबा कहता उठ। वह भी बाबा ने छीन लिया, बाकी क्या चाहिए। इसलिए हमेशा बाबा कहता बेहद के वैरागी बनो। जितना वैरागी उतना योगी रहते।

7) सेवा तो आप लोग कर ही रहे हो। जो कुछ भी है उसे सफल करते चलो। कल का क्या पता। जितना बुद्धि में सेवा है, उनका ही महान भाग्य है। परन्तु सेवा के जोश के साथ-साथ होश भी चाहिए। लौकिक को भी थोड़ा चलाना करना ठीक रहता। नहीं तो सर्विस में डिस-सर्विस हो जाती। जितना सर्विस में बुद्धि लगी रहे उतना अच्छा है, आर्टीकल लिखो, डायलॉग लिखो, अनुभव लिखो, आर्टिस्ट बनो। किसी न किसी कार्य में बुद्धि लगी रहे। सब आर्ट सीखो वक्त पर सब काम आता है।

8) अगर सेवा में फोर्स है तो कुमारों के कारण, कुमार अपना तन भी लगाते, मन भी लगाते, धन भी लगाते। सभी सेन्टर्स की यह रिजल्ट है। आप कुमार सब चिन्ताओं से मुक्त हो। कुमार कुमारी माना संगम के जीवनमुक्त। कोई बन्धन नहीं। वृत्ति में मेरा बाबा, वायुमण्डल में वायब्रेशन है सब बाबा के बनें, कल्याण की भावना है। जीवन है बाबा की सेवा में। हम आप दुनिया के वायुमण्डल, वायब्रेशन से मुक्त हैं। हम दुनिया को बाबा के वायुमण्डल में बांधते हैं।

9) आप सब 100 परसेन्ट लकी हो। आप सबको सर्विस के लिए बाबा ने अपनी भुजायें बनाया है। आप सब समर्पण हो। अगर आप धन से सेवा नहीं करते तो सर्विस नहीं बढ़ती। आप यह नहीं सोचो हमें बाबा ने नौकरी का बन्धन दिया। आप धन से सहयोग न दो तो सेन्टर कैसे चले। आपका पूरा तन-मन-धन बाबा के प्रति है। आप 100 कमाओ उसमें 25 माँ बाप को, 25 अपने लिए तो 50 बाबा के कार्य में लगाओ। यही सोचो मैं बाबा के कार्य के लिए 5 टका कमाने गया हूँ। दुनिया ही गन्दी है। गन्दों के बीच हमें अपनी रूहानियत में रहना हैं क्योंकि बाबा के लिए कमा रहा हूँ। लौकिक माँ बाप ने पाला है उनको भी सहयोग देना मेरा फर्ज है। धन को परसेन्टेज़ से जरूर बाँटो।

10) जो कुमार अपने हाथ से पकाकर खाते हैं, मैं उन्हों को अपने से भी बड़ा मानती हूँ। आप धन्य हो। अगर सूखी रोटी खाकर चलते, तो बाबा आपको मदद देगा। आप दो रोटी खाओ बाबा की मस्ती में रहो। ऐसे नहीं सोचो रोज़-रोज़ ऐसे कैसे होगा। अरे रोज़ संगम थोड़ेही आयेगा। जितना तपस्वी बनो उतना धन्य बनेंगे। धन्य बनना है तो त्यागी, तपस्वी बनो। तप से ही महान बनेंगे, कर्मेन्द्रियों को वश करना ही तपस्या है। वृत्तियों को कन्ट्रोल करना ही तपस्या है। अतीन्द्रिय सुख के रस में रहो, रोटी तो घोड़े को घास है, इसका रस नहीं। अच्छा - ओम् शान्ति।